बी.ए. पार्ट–द्वितीय (2017)

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र : रीतिकालीन काव्य

समय : 3 घण्टे | उत्तीर्णांक : 36 | पूर्णांक : 100

इकाई – 1

1. **केशव** : **रामचन्द्रिका** – गणेश वन्दना, सरस्वती वन्दना, श्रीराम वन्दना, अवधपुरी शोभा वर्णन, सीता–स्वयम्वर, परशुराम संवाद, वन में राम, भरत–कैकेयी संवाद, लक्ष्मण–क्रोध, पंचवटी वर्णन, सीता हरण, अशोक वाटिका में रावण–सीता, सीता के विरह में राम दशा, रावण–हनुमान संवाद, लंका दहन, अंगद–रावण संवाद, सीता की अग्नि–परीक्षा, रामराज्य वर्णन।

2. **बिहारी** : **दोहे** – मेरी भव बाधा हरौ, सीस मुकुट कटि काछनी, मोर मुकुट की चन्द्रिकनु, सोहत ओढ़े पीत पट, तजि तीरथ, अधर धरत हरि, कीने हूँ कोटिन, अजौं तर्‌यौना, तो पर वारौं, बतरस–लालच, नेह न नैनति, केसरि कै सरि, या अनुरागी चित्त, डीठि न परतु, अंग अंग नग, लिखन बैठि जाकी, दृग उरझत, मानहु बिधि तन, सघन कुंज छाया, भाल लाल बेंदी, इत आवति चलि, रनित भृंग घंटावली, कहलाने एकत बसत, अरून सरोरूह कर, ज्यौं व्हैहौं त्यों, करौ कुवत जगु, कब को टेरत, थोरेई गुन रीझते, स्वारथु सुकृत न, करि फलेल का, जिन दिन देखे, कौन भांति रहि, कहत नटत रीझत, नेह न नैननु, नहिं परागु, मंगल बिन्दु सुरंग, दीरघ साँस न लेहु, पत्रा ही तिथि, तो लग या, तन्त्री नाद कवित्त–रस, कनक कनक तै, नर की अरू, मरत प्यास पिंजरा, इहीं आस अटक्यौ रहत, लिखन बैठि जाकी, कंचन तन धन, आवत जात न जानिए, पावस निसि।

3. **देव** : **छंद** – सुनि के धुनि चातक–मोरनि की, सोवत तें सखी जाग्यो नहीं, सपने में गई देखन हौं सुनि, ता दिन तें अति व्याकुल है तिय, बाल लतान मैं बाल कौ बोल, मोर ही भौन मैं भावतो आवत, एक तुहीं वृषभानु सुता अरु, सराहैं सुरासुर सिद्ध समाज, आपुस मैं रस मैं रहसैं, सुख सेज के मंदिर ते गुरमंदिर, श्रीबिधि बानी जु बेद बखानी, जब ते कुँवर कान्ह रावरी कलानिधान, श्रीझि रिझि रहति रहसि हँसि हँसि उठैं, आई बरसाने ते बोलाई वृषभानुसुता, राधिका कान्ह को ध्यान धरै, पावरनि ते पावड़े परे है पुर पौरि लग, सावन मास सखीन मैं सुन्दरि, मन्दिर तें निकसी बनि ज्यौं ससि, खोरि लौ खेलन आवतियेन तौ, धार मैं धाइ धँसी निधार व्है, रावरो रूप रह्यो भरि बैनन, प्रेम कहानिन सो पहिले, आँखिन आँखि लगाये रहैं, साँसन ही सों समीय गयो, एकै अभिलाष लाल–लाख भाँति लेखियत, कोऊ कहौ कुलटा, बरुनी बधबंर से गूदरी पलक दोऊ, झहरि झहरि झीनी बूँदनि परित मानो।

इकाई – 2

4. **पद्माकर – ऋतु वर्णन** – कूलन में, केलिन, कछारन में; औरै भाँति कुजन में; चंचला चमाकैं; आयी हौ खेलन फाग; सीज ब्रज चंद पै चली; झिलक झकोर रहै; आपहि आपपै रुसि रही; आज बरसाने की नबेली अलबेली बधू।

रस निरूपण – ऐसी न देखी सुनी सजनी; ए हो नंदलाल ऐसी।

फुटकर – तीर पर तरनि–तनूजा, गोकुल के कुल को, फहरे निसान दिसानि, सिर कटहिं, एकै गहि भाले, किलकिलकत चंडी, कामद कला–निधान, सूरत के साह कहै, पुच्छन के स्वच्छ, पारावार–पार–लौं।

भक्ति – देवनर किन्नर, राम को नाम जपो, भूख लगे तब देत है भोजन, भोग में रोग वियोग संयोग में, या जग जानकी–जीवन, मीठो महा मिसिरी तें, जोग जप सन्ध्या, काम बस सूपनखा, गंगा के चरित्र, सुखद सुहाई।

5. **सेनापति :** **श्लेष वर्णन** – दीक्षित परसराम; मूढ़न कौं अगम; दोष सौं मलीन; सारंग धुनि सुनावै; लाह सौं लसति नग; लीने सुधराई संग; सोहति बहुत भाँति; प्रीतम तिहारे अनगन; बदन सरोरुह के संग; बानरन राखै तोरि।

शृंगार वर्णन – अंजन सुरंग जीते खंजन; हिय हरि लेत हैं; केसरि निकाई; मधुर अमोल बोल; हित सौं निरखि हँसे; रूप कै रिझावत हौ; रोस करौं तोसौं; मालती की माल तेरे; कौहू तुव ध्यान करै; चंद दुति मंद कीने।

ऋतु वर्णन (ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, वसन्त)

ग्रीष्म – बृख को तरनि; **वर्षा** – दामिनी–दमक;
शरद् – पावस निकास; **शिशिर** – सिसिर में ससि;
वसन्त – बरन–बरन तरु फूले।

रामायण–वर्णन – सुर तरु सार की; कंज के समान; धाता जाहि गावै; गाई चतुरानन सुनाई; सकल सुरेस; तौर्‌यौ है पिनाक।

6. **महाकवि भूषण : गणेश स्तवन** – अकथ अपार भवपंथ के।

राजवंश–वर्णन – राजत है दिनराज; महाबीर ता बंस में; ता कुल में नृपवृंद; सदा दान किखान में; तातें सरजा बिरद भो; भूषन भनि ताके भयौ; दसरथ राजा राम भो; दच्छिन के सब।

शिवा–प्रशस्ति – त्रिभुवन भहिं परसिद्ध; सिवराज साहिसुत सथ्यनित; सीय संग सोभित सुलच्छन; सुंदरता गुरूता प्रभुता भनि; तेरौ तेज सरजा; वेद राखे बिदित; इंद्र जिमि जृंभ पर; चढत तुरंग चतुरंग; छूटत कमान बान; गरुड़ को दावा; ऊँचे घोर मंदर के; मुंड कटत कहुँ रुंड।

छत्रसाल–पराक्रम – भुज भुजगेस की वै; राजत अखंड तेज छाजत।

इकाई – 3

7. **घनानन्द** : **कवि–प्रशस्ति** – प्रेम सदा अति ऊँचौ लहे।

प्रेम–पीर–वर्णन – वहै मुसक्यानि; भोर तैं साँझ लौं; सोएँ न सोयबो; निस–द्यौंस खरी; तब तौ छबि पीवत; रावरे रूप की रीति अनूप; जेतौ घट सोधौं; तब व्है सहाय हाय; चोप चाह चावनि; नेह–निधान सुजान समीप; चंद चकोर की चाह करै; हिये मैं जु आरति; दिननि के फेर सा; कौन की सरन जैये; घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ; जिन आँखिन; पूरन प्रेम को मंत्र; भए अति निठुर; मीत सुजान अनीत करौ जिन; पहले अपनाय सुजान सनेह; तेरे देखिबे कों; अति सूधो सनेह को; कित को ढरि गौ; आँ जौ न देखै; इत बाँट परी सुधि; अन्तर मैं बासी पै; सुनि री सजनी; बैरी वियोग की हूकनि;

8. **गिरधर कविराय – कुण्डलियां** : पुत्र प्राणते अधिक है, रही न रानी कैकयी, चिन्ता ज्वाल शरीर की, दाड़िम के धोखे गयो, भूलो चातक आइकै, सोना लादन पिव गये, मोती लादन पिव गये, दौलत पाय न कीजिये, गुण के गाहक सहस नर, साँई सब संसार में, पीवै नीर न सरवरौ, नारा कहै नदीन सन, मूसा कहै बिलार सों, कौवा कहे मराल से, प्रीति कीजिये बडेन सौं, बड़े वडेन की ऐसि ही, बीती ताहि बिसार द, साँई नदी समुद्र को, साँई समय न चूकिये, नयना जब परवश भये, बानी मात्र जगत सब, बानी विषय न करि सकै, खल सज्जन दो जगत में, चिदविलास परपंच यह, राम तुही तुहि कृष्ण है,।

9. **रज्जब – पद** : औधू अकल अनूप अकेला, मन की प्यास प्रचंड न जाई, गुरू प्रसाद अगम गति पावै, संतो मगन भया मन मेरा, आरती तुम ऊपरि तेरी।

साखी : जन रज्जब गुरू की, माया पानी दूध मन, घटा गुरू आशोज की, सेवक कुंभ कुंभार, घट दीपक बाती पवन, दरपन में सब देखिये, साधू सदनि पधारतै, नान्हौ सौ नान्हें हुए, रज्जब की अरदास यह, सब घटघटा समानि, रज्जब बूँद समंद की, पतिव्रता कै पीव बिन, हरि दरिया में मीन मन, नर निरवैरी होत ही, औगुण ढाकै और के, शील रहै सुमिरण गहै, अपना पड़ता आप ही, ज्यूँ सुन्दरि सर न्हावताँ, निहकामी सेवा करै, रामनाँव निजनाव गति।

इकाई – 4

रीतिकालीन काव्य का इतिहास, परिस्थितियाँ, नामकरण, प्रवृत्तियाँ, प्रमुख धाराएँ एवं प्रमुख कवि।

इकाई – 5

काव्य शास्त्र :– काव्य के लक्षण, काव्य के हेतु, काव्य प्रयोजन (संक्षिप्त परिचय), नायक–नायिका भेद।

प्रमुख छन्द :– दोहा, चौपाई, कुंडलियाँ कवित्त, गीतिका, हरिगीतिका रोला, उल्लाला, मालिनी, सवैया, द्रुतविलम्बित।

परीक्षकों के लिए निर्देश :–

1. प्रश्न पत्र इकाइयों में विभक्त हो।
2. पत्येक इकाई से निर्देशानुसार विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाए।
3. पत्येक इकाई से विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्नों को निरन्तर क्रम से पूछा जाए।
4. पाठ्यक्रम में कुछ न कुछ बदलाव होता रहता है अतः परीक्षक पूर्ववर्ती प्रश्न पत्र को प्रमाण न माने।

विस्तृत अंक योजना :–

इकाई – 1

(अ) दो व्याख्याएँ पूछी जाएगी जिनमें से एक व्याख्या करनी होगी।
शब्द सीमा – 200 शब्द अंक – 8 1x8=8

(ब) दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे उनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 12 1x12=12

(स) दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 4 1x4=4

इकाई – 2

(अ) दो व्याख्याएँ पूछी जाएगी जिनमें से एक व्याख्या करनी होगी।
शब्द सीमा – 200 शब्द अंक – 8 1x8=8

(ब) दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे उनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 12 1x12=12

(स) दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 4 1x4=4

इकाई – 3

(अ) दो व्याख्याएँ पूछी जाएगी जिनमें से एक व्याख्या करनी होगी।
शब्द सीमा – 200 शब्द अंक – 8 1x8=8

(ब) दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे उनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 12 1x12=12

(स) दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 4 1x4=4

इकाई – 4

(अ) रीतिकाल के इतिहास से दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक करना होगा।
शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 10 1x10=10

(ब) रीतिकाल के इतिहास से दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक करना होगा।
शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 4 1x4=4

इकाई – 5

(अ) काव्य शास्त्र से दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक करना होगा।
शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 10 1x10=10

(ब) काव्य शास्त्र से दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक करना होगा।
शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 4 1x4=4

सहायक पुस्तकें :–

1. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ – शिवकुमार शर्मा
2. रीति मुक्त स्वच्छन्द काव्य धारा – मनोहरलाल गौड़
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. बहादुर सिंह
4. रीतिकालीन हिन्दी और काव्य – भगवानदास तिवारी
5. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह
6. महाकवि मतिराम – त्रिभुवन सिंह
7. केशव की काव्य कला – कृष्ण शंकर शुक्ल
8. घनानन्द काव्य और आलोचना – किशोरी लाल
9. समीक्षा शास्त्र – दशरथ ओझा

द्वितीय प्रश्न पत्र : नाटक एवं एकांकी

समय : 3 घण्टे | उत्तीर्णांक : 36 | पूर्णांक : 100

इकाई – 1

नाटक – हस्तिनापुर – नन्दकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर

इकाई – 2

नाटक – मुक्तिपथ – रवि चतुर्वेदी, श्याम प्रकाशन, जयपुर

इकाई – 3

एकांकी :–

1. **एक तोला अफीम की कीमत** – रामकुमार वर्मा
2. **साहब को जुकाम है** – उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
3. **परदे के पीछे** – उदयशंकर भट्ट
4. **मकड़ी का जाला** – जगदीशचन्द्र माथुर
5. **अदृश्य आदमी की आत्महत्या** – विपिन अग्रवाल
6. **बहुत बड़ा सवाल** – मोहन राकेश

इकाई – 4

7. **ताँबे के कीड़े** – भुवनेश्वर
8. **काल पुरुष और अजंता की नर्तकी** – लक्ष्मीनारायण लाल
9. **हरी घास पर घंटे भर** – सुरेन्द्र वर्मा
10. **समरथ को नहीं दोष गुसाईं** – सफदर हाशमी
11. **यहाँ रोना मना है** – ममता कालिया
12. **अमरजोत** – लक्ष्मीनारायण रंगा

इकाई – 5

हिन्दी नाटक एवं एकांकी का उद्‌भव एवं विकास तथा नाटक एवं एकांकी का तात्त्विक अध्ययन।

परीक्षकों के लिए निर्देश :–

1. प्रश्न पत्र इकाइयों में विभक्त हो।
2. प्रत्येक इकाई से निर्देशानुसार व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाए।
3. प्रत्येक इकाई से व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्नों को निरन्तर क्रम से पूछा जाए।
4. पाठ्यक्रम में कुछ न कुछ बदलाव होता रहता है अतः परीक्षक पूर्ववर्ती पश्न पत्र को प्रमाण न माने।

विस्तृत अंक योजना :–

इकाई – 1

(अ) दो व्याख्याएँ नाटक से पूछी जाएँगी जिनमें से एक व्याख्या करनी होगी।
शब्द सीमा – 200 शब्द अंक – 8 1x8=8

(ब) दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे उनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 10 1x10=10

(स) दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक प्रश्न करना होगा।
शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 3 1x3=3

इकाई – 2

(अ) दो व्याख्याएँ नाटक से पूछी जाएँगी जिनमें से एक व्याख्या करनी होगी।
शब्द सीमा – 200 शब्द अंक – 8 1x8=8

(ब) दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे उनमें से एक प्रश्न करना होगा।

शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 10 1x10=10

(स) दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक प्रश्न करना होगा।

शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 3 1x3=3

इकाई – 3

(अ) दो व्याख्याएँ एकांकियों से पूछी जाएँगी जिनमें से एक व्याख्या करनी होगी।

शब्द सीमा – 200 शब्द अंक – 8 1x8=8

(ब) दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे उनमें से एक प्रश्न करना होगा।

शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 10 1x10=10

(स) दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक प्रश्न करना होगा।

शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 3 1x3=3

इकाई – 4

(अ) दो व्याख्याएँ एकांकियों से पूछी जाएँगी जिनमें से एक व्याख्या करनी होगी।

शब्द सीमा – 200 शब्द अंक – 8 1x8=8

(ब) दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे उनमें से एक प्रश्न करना होगा।

शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 10 1x10=10

(स) दो लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से एक प्रश्न करना होगा।

शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 3 1x3=3

इकाई – 5

(अ) नाटक और एकांकियों के उद्‌भव और विकास से दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से एक करना होगा।

शब्द सीमा – 400 शब्द अंक – 10 1x10=10

(स) चार लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से दो प्रश्न करने होंगे।

शब्द सीमा – 100 शब्द अंक – 3 2x3=6

सहायक पुस्तकें :–

1. आधुनिक हिन्दी नाटक – डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह
3. नाट्य कला – डॉ. रघुवंश
4. नाटक का उद्‌भव और विकास – दशरथ ओझा
5. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी
6. भारतेन्दु समग्र – हेमन्त शर्मा (हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी)